



Hargharpanditji

॥ श्री हनुमान व्रत कथा ॥

राम भक्त हनुमान जी की जय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री हनुमान व्रत कथा ॥

व्रत का महत्व

श्री हनुमान का व्रत मुख्यतः मंगलवार और शनिवार को रखा जाता है। इस व्रत से भय, रोग, शत्रु बाधा, ग्रह दोष एवं संकट दूर होते हैं। हनुमान जी अपने भक्तों की रक्षा करते हैं और साहस, बल एवं बुद्धि प्रदान करते हैं।

श्री हनुमान व्रत कथा

प्राचीन समय की बात है। एक नगर में एक वृद्ध माता अपने छोटे पुत्र के साथ रहती थी। वह अत्यंत निर्धन थी, किन्तु श्री हनुमान की परम भक्त थी। वह प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी का व्रत रखती, पूजा करती और कथा सुनती थी।

वृद्धा नियमपूर्वक व्रत करती थी। वह उस दिन भूमि को नहीं लीपती थी और न ही मिट्टी खोदती थी। एक बार उसके पड़ोसियों ने उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने का विचार किया।

मंगलवार के दिन उन्होंने वृद्धा से कहा — “आज हमारे घर आकर मिट्टी लीप दो।” वृद्धा बोली — “आज मैं हनुमान जी का व्रत करती हूँ, इसलिए भूमि नहीं लीप सकती। यदि कोई दूसरा कार्य हो तो बताइए।”

किन्तु पड़ोसी नहीं माने। उन्होंने उसका बहुत उपहास किया। वृद्धा दुखी होकर घर लौट आई और हनुमान जी का स्मरण करने लगी।

कुछ समय बाद उसके पुत्र को गंभीर रोग हो गया। वृद्धा अत्यंत दुखी होकर मंदिर गई और रोते हुए बोली —

“हे पवनपुत्र! मैं आपकी सच्चे मन से पूजा करती हूँ। यदि मेरी भक्ति सच्ची है तो मेरे पुत्र की रक्षा करें।”

वृद्धा की सच्ची भक्ति देखकर श्री हनुमान प्रसन्न हुए। उसी रात वृद्धा को स्वप्न में दर्शन देकर बोले —

“भय मत करो। तुम्हारा पुत्र स्वस्थ हो जाएगा। तुम्हारी भक्ति से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।”

प्रातः होते ही उसका पुत्र पूर्णतः स्वस्थ हो गया। यह चमत्कार देखकर पूरे
नगर के लोग हनुमान जी की भक्ति करने लगे।
तब से श्रद्धा एवं नियमपूर्वक मंगलवार का व्रत करने की परम्परा और
अधिक प्रसिद्ध हो गई।

व्रत में क्या करें

प्रातः स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें।
हनुमान चालीसा का पाठ करें।
सिंदूर और चमेली का तेल अर्पित करें।
गुड़-चना या बूंदी का भोग लगाएँ।
“ॐ हं हनुमते नमः” मंत्र का जाप करें।

व्रत में क्या न करें

क्रोध और असत्य से बचें।
तामसिक भोजन न करें।
मांस, मदिरा आदि का सेवन न करें।

व्रत का फल

जो भक्त श्रद्धा और विश्वास से श्री हनुमान का व्रत करता है, उसके
जीवन के संकट दूर होते हैं तथा उसे बल, बुद्धि, साहस और सफलता
प्राप्त होती है।